देह में परमेश्वर

रॉय एच. लेनियर सीनियर

पिछली बीस शताब्दियों से यीशु नासरी लोगों के लिए आश्चर्य का विषय बना हुआ है। उसके मित्रों ने उससे परमेश्वर के पाप रहित पुत्र और लोगों को उनके पापों से छुड़ाने वाले के रूप में प्रेम किया और उसकी उपासना की है। उसके शत्रुओं और तरह-तरह के अविश्वासी लोगों ने उसे बदनाम करने के असंख्य व्यर्थ प्रयास किए, परन्तु अन्त में उन्हें यह मानना पड़ा कि वह हर दृष्टि से मनुष्य से ऊपर था।

उसने ऐसा जीवन व्यतीत किया जैसा न तो उससे पहले किसी ने किया होगा और न ही बाद में अब तक किया है। उसकी शिक्षा का ढंग और बातें किसी भी युग के दूसरे किसी भी व्यक्ति से उत्तम हैं। उसके काम सचमुच परमेश्वर के काम थे। इतने सतत और द्वेषपूर्ण विरोध के बावजूद उसके प्रभाव ने अधिक लोगों का भला किया है।

बुरे और अविश्वासी लोगों ने कई प्रकार से इन तथ्यों का कारण बताने की कोशिश की है, परन्तु इसकी केवल एक ही संतोषजनक व्याख्या है। यह सरल और श्रेष्ठ व्याख्या उस इस्राएली के शब्दों में मिलती है जिसमें कोई छल नहीं था: ''हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है'' (यूहन्ना 1:49क; देखिए पद 47)। पवित्र शास्त्र की शिक्षा के अनुसार, यीशु नासरी मनुष्य के रूप में परमेश्वर था अर्थात परमेश्वर मनुष्य बना और परमेश्वर मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ।

भविष्यवक्ताओं ने कहा कि वह परमेश्वर था

यशायाह

यीशु के जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व, यशायाह ने कहा था, ''सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी'' (यशायाह 7:14)। मत्ती ने कहा कि यह भविष्यवाणी यीशु के जन्म के साथ पूरी हो गई थी (मत्ती 1:22)। उसने हमारे लिए ''इम्मानुएल'' शब्द का अर्थ ''परमेश्वर हमारे साथ'' बताया (मत्ती 1:23)। इस प्रकार, यशायाह और मत्ती के अनुसार, यीशु ''परमेश्वर हमारे साथ'' था।

पुन:, यशायाह ने उसके आने की इन शब्दों में भविष्यवाणी की थी:

> क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी

> परमेश्वर अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा (यशायाह 9:6)।

इस वाक्य से हमें पता चलता है कि दाऊद के सिंहासन पर बैठने वाला "पराक्रमी परमेश्वर" होना था। बिना किसी संदेह के स्वर्गदूत जिब्राइल ने इस भविष्यवाणी का हवाला दिया जब उसने मरियम को बताया कि उसके यहां एक पुत्र होगा और उसका नाम यीशु रखा जाएगा (लूका 1:31)। "वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा" (लूका 1:32)। मरियम के पुत्र ने "परम प्रधान का पुत्र" कहलाना था क्योंकि वह यशायाह की भविष्यवाणी का "पराक्रमी परमेश्वर" था।

मीका

मीका भविष्यवक्ता ने कहा था, "हे बैतलेहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीन काल से नहीं वरन अनादि काल से होता आया है" (मीका 5:2)। जब राजा हेरोदेस ने महायाजकों और ग्रन्थियों से पूछा था कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए तो उन्होंने यही भविष्यवाणी देखी थी। इसी भविष्यवाणी के कारण हेरोदेस ने बुद्धिमान लोगों को बैतलहम भेजा था जहां उन्हें "यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है" मिला था (मत्ती 2:2-8)। मीका के अनुसार जन्म लेने वाला यहूदियों का यह राजा, सदा से सदा तक था। सृष्टि के लिए यह बात नहीं कही जा सकती अर्थात केवल सृष्टिकर्त्ता के लिए कही जा सकती है। इस प्रकार भविष्यवाणी के अनुसार, उसे परमेश्वर के रूप में जाना जाना था।

यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर है

यहूदियों की अवधारणा

यह प्रमाणित करने के लिए कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था, शास्त्र में से उद्धृत करने से पहले, हमें मसीहा के प्रति यहूदी लोगों के दिलों में पाई जाने वाली धारणा को जान लेना चाहिए। यह विचार उनमें से ही एक, ट्राफो नामक आदमी ने जस्टिन मार्टिर के साथ तय किया था (ईस्वी 110-ईस्वी 165):

> ... कि यह मसीह युगों से पहले परमेश्वर के साथ अस्तित्व में था, फिर उसने जन्म लेकर मनुष्य बनने के लिए अपने आपको दे दिया, फिर भी वह मनुष्य का मनुष्य नहीं है, मुझे यह [दावा] विरोधाभासी ही नहीं बल्कि मूर्खतापूर्ण भी लगता है।[1]

जो उसके मनुष्य होने और चुनकर अभिषिक्त होने, और फिर मसीह बनने की बात दृढ़ता से कहते हैं, मुझे लगता है कि वे अधिक कपटपूर्ण ढंग से बोलते हैं। ... क्योंकि हम सभी अपेक्षा करते हैं कि मसीह मनुष्यों से [उत्पन्न हुआ] मनुष्य ही होगा, और एलिय्याह आकर उसका अभिषेक करेगा। परन्तु यदि यह व्यक्ति मसीह लगता है, तो अवश्य ही उसे मनुष्यों से [जन्म लेकर] मनुष्य के रूप में जाना जाना चाहिए; परन्तु इस स्थिति से कि एलिय्याह अभी नहीं आया, मैं निष्कर्ष निकालता हूं कि यह व्यक्ति वह [मसीह] नहीं है।[2]

मत्ती 22:41–45 में वर्णित घटना से पता चलता है कि यीशु के समय यहूदी लोगों में यही विश्वास पाया जाता था:

जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उन से पूछा कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? यह किस की सन्तान है? उन्होंने उस से कहा, दाऊद की। उस ने उन से पूछा, तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा?

वे यहूदी इस बात को क्यों नहीं समझ पा रहे थे कि दाऊद ने अपनी संतान को ''प्रभु'' क्यों कहा। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि वे मसीहा के दाऊद के घराने में ''शारीरिक माता पिता से जन्म लेने'' की आशा कर रहे थे। यदि उन्हें धर्म शास्त्र की समझ होती, जिसमें सिखाया गया था कि उसने मनुष्य के रूप में परमेश्वर होना था (दाऊद से निकला मांस), तो वे इस प्रश्न का उत्तर दे सकते थे।

यहूदियों के अनुमान से, ख्रिस्तुस अर्थात मसीहा होने का दावा करना कोई बड़ा पाप नहीं था; न ही लोगों के लिए किसी को मसीह मानना अपराध था। मत्ती 9:27 में दो अंधों ने यीशु को ''दाऊद का पुत्र'' कहा था। मत्ती 15:22 में कनानी स्त्री ने भी ऐसा ही कहा था। जब यीशु यरूशलेम को जा रहा था जिसे उसका ''विजयी प्रवेश'' कहा जाता है तब भी लोगों की भीड़ उसके आगे-आगे यह कहते हुए जा रही थी, ''दाऊद के संतान को होशाना'' (मत्ती 21:1–17)। ''दाऊद का पुत्र'' अभिव्यक्ति का इसी प्रकार से मत्ती 21:9 और 22:42 में इस्तेमाल किया गया है। लोगों की भीड़ उसे मसीह कह रही थी, जबकि उनमें से बहुत कम लोग उसके परमेश्वर के पुत्र अर्थात मनुष्य के रूप में परमेश्वर होने का विश्वास करते थे। बाद में, वे उस पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगाने वाले अगुओं के साथ मिल गए थे क्योंकि उसने कहा था कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

यीशु का दावा

इस सब को ध्यान में रखते हुए, आइए देखें कि यीशु ने अपने आपको परमेश्वर कहा। जैसे ''मनुष्य का पुत्र'' कहने का अर्थ ''मनुष्य'' होता है वैसे ही उसने ''परमेश्वर'' कहने

के लिए "परमेश्वर का पुत्र" शब्द का इस्तेमाल किया था। यूहन्ना 5:17, 18 में हम पढ़ते हैं:

> इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं। इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था।

यहूदी लोग अपने आपको परमेश्वर के पुत्र और परमेश्वर को अपना पिता कहते थे (यूहन्ना 8:41)। निश्चय ही उन्हें यीशु के परमेश्वर को अपना पिता कहने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए थी, परन्तु उन्हें आपत्ति थी, क्यों? उनकी आपत्ति यह थी कि यीशु एक शब्द का इस्तेमाल करता था जिसका अर्थ "अपना पिता" था जो यह संकेत देता था कि वह "परमेश्वर के तुल्य" है। जब उसने ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया जिन्होंने उसे परमेश्वर के बराबर कर दिया, तो यह अपने आपको परमेश्वर कहने के जैसा ही था, और उन्हें यह परमेश्वर की निन्दा लगती थी।

यूहन्ना 8:53ख, 54 में यहूदियों ने उससे पूछा, "तू अपने आप को क्या ठहराता है? यीशु ने उत्तर दिया; यदि मैं आप अपनी महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करने वाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।" यीशु ने अपने सही पिता को पहचाना जिसे यहूदी अपना परमेश्वर कहते थे। यह इस बात को कहने का एक अन्य ढंग था कि वह परमेश्वर का विलक्षण तरीके से पुत्र है जिसमें कोई और दूसरा व्यक्ति नहीं है। इसलिए, वह अपने आपको परमेश्वर के समतुल्य बना रहा था।

यहूदी लोग यह समझते थे कि यीशु अपने आपको परमेश्वर का पुत्र बताकर परमेश्वर के तुल्य कर रहा है। यूहन्ना 10:30–36 में यह बात स्पष्ट होती है। यीशु के कथन "मैं और पिता एक हैं" की तीव्र प्रतिक्रिया हुई:

> ... यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए। इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिए तुम मुझे पत्थरवाह करते हो? यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि भले काम के लिए हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिए कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो? यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती) तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है, इसलिए कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।

यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि जब यीशु ने अपने आपको "परमेश्वर का पुत्र" कहा, तो यहूदी लोग समझ गए कि उसने अपने आपको परमेश्वर बताया है।

उसका यही दावा अन्त में उसकी मृत्यु का कारण बना था। यहूदी सभा के सामने, उसे आज्ञा दी गई, ''यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे।'' इस पर, उसके उत्तर ने उनके लिए उसके दावे में कोई संदेह न रहने दिया। क्योंकि मसीह होने का दावा करने के विरुद्ध कोई कानून नहीं था, इसलिए वे कुछ नहीं कर सकते थे। फिर, उससे पूछा गया, तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है ? उसने उत्तर दिया ''हां, मैं हूं।'' इस पुष्टि के बाद, यहूदी कहने लगे, ''अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है ? क्योंकि हमने आप ही उसके मुंह से सुन लिया है।'' (पढ़िए लूका 22:66–71)।

फिर वे उसे पीलातुस के सामने ले गए। वहां उसके विरुद्ध पहला आरोप यह लगाया गया कि उसने अपने आपको ''मसीह'' अर्थात एक राजा बताया है। जब उन्होंने देखा कि इस आरोप से कुछ नहीं बनेगा, तो उन्होंने कहा, ''हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार यह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया'' (यूहन्ना 19:7)। उनकी व्यवस्था के अनुसार, परमेश्वर की निन्दा के दोषी के लिए दण्ड मृत्यु था (लैव्यव्यवस्था 24:16)। उन्होंने उस पर परमेश्वर की निन्दा का दोष लगाया क्योंकि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र माना था (मत्ती 26:63–66)। फिर, हम देखते हैं कि यीशु ने परमेश्वर के तुल्य होने का दावा किया अर्थात उसने देह में परमेश्वर होने का दावा किया था।

प्रेरितों का संदेश था कि वह परमेश्वर है

पृथ्वी पर रहते हुए यीशु के सबसे नजदीकी लोग अर्थात वे लोग जिन्होंने उसके आश्चर्यकर्म देखे थे और तीन से भी अधिक वर्षों तक उसकी शिक्षाएं सुनी थीं, प्रेरित ही थे। उन लोगों ने उसे कब्र में से जी उठने के बाद देखा था और उसके साथ खाना भी खाया था। बाद में, उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था, जिसने न केवल बिना किसी गलती के उसकी अगुआई ही की बल्कि उन्हें वे बातें भी दी जो उन्हें हम तक वचन पहुंचाने में इस्तेमाल करनी चाहिए थीं। उन लोगों ने कहा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर मनुष्य बना, अर्थात देह में परमेश्वर था।

यूहन्ना

प्रिय चेला, यूहन्ना शायद पूरी तरह से पिता के साथ हमारे प्रभु के सम्बन्ध को समझ गया था और उसने उस सम्बन्ध की प्रशंसा की थी। बिना किसी गलती के पवित्र आत्मा की अगुआई में उसने लिखा,

> आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ...

> और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना 1:1–4, 14)।

''वचन'' जिसका उल्लेख यहां हुआ है वह परमेश्वरत्व में दूसरा व्यक्ति था। वह वचन यीशु बना। इस तथ्य पर बहस की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आयत 14 में यह स्पष्ट कर दिया गया है। इसलिए आइए इस वचन के बारे में दिए गए कथनों को पहले देखते हैं जो उसके परमेश्वर होने को प्रमाणित करते हैं। दूसरा, हम देखेंगे कि यह वचन, जो परमेश्वर प्रमाणित हो चुका है, देहधारी हुआ और यीशु नासरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ था।

वचन की अनन्तता को सबसे पहले ''आदि में ... था'' में दिया गया है। सभी वस्तुओं के आरम्भ के समय, वचन पहले से ही ''था''; वह सृष्टि की प्रत्येक वस्तु से पहले था। इसलिए वह सृष्टि का भाग नहीं था अर्थात वह सदा से सदा तक है। सदा से सदा तक तो केवल परमेश्वर ही है; इसलिए वह वचन परमेश्वर है।

फिर, शास्त्र में पिता के साथ उसके अस्तित्व को दो बार बताया गया है: ''और वचन परमेश्वर के साथ था''; ''आदि में वचन परमेश्वर के साथ था।'' फिर, उसके अनिवार्य तथा व्यक्तिगत ईश्वर होने की पुष्टि की जाती है: ''और वचन परमेश्वर था।'' अन्त में, पिता से उसके अलग होने की बात कही जाती है: ''आदि में वह परमेश्वर के साथ था।'' यदि इन शब्दों से यह संदेश नहीं मिलता कि यहां दो जीव हैं, जिनमें से एक को सही–सही ''परमेश्वर'' कहा जा सकता है तो यह शब्द केवल अस्पष्ट गड़बड़झाला ही है। ''वचन परमेश्वर था,'' फिर भी वह किसी दूसरे जीव के साथ था जिसे ''परमेश्वर'' कहा गया है; परिणामस्वरूप दो जीव थे जिन्हें ''परमेश्वर'' कहा गया है। दूसरी ओर, उनकी एकता के कारण, हम सचमुच कह सकते हैं, ''परमेश्वर केवल एक ही है।''

फिर, इस वचन को सृष्टि की रचना करने वाला कहा जाता है: ''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।'' यह फिर से प्रमाणित करता है कि वह सारी सृष्टि से पहले अस्तित्व में था और इसलिए उसकी रचना नहीं हुई थी। अगले कथन में उसके स्व–अस्तित्व और जीवन प्रदान करने और प्रकाश देने की शक्ति का पता चलता है: ''उसमें जीवन था; वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।'' इसके अनुसार, वह सारे जीवन तथा प्रकाश का स्रोत था। वास्तव में, वह परमेश्वर था।

परमेश्वर होने के कारण, यह वचन, ''देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।'' देहधारी होने पर, उसने अपना कोई भी गुण गंवाया नहीं जो उसे वचन अर्थात परमेश्वर के रूप में पहचान दिलाता है। मनुष्य के रूप में, उसने अपने अनन्त अस्तित्व का दावा किया जब उसने कहा, ''पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं'' (यूहन्ना 8:58)। यीशु नासरी के रूप में, उसने यह कहकर पिता के साथ अपनी संगति का ऐलान किया, ''हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर

जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी'' (यूहन्ना 17:5)।

1 यूहन्ना में हमें प्रभु यीशु के परमेश्वर होने का एक और प्रमाण मिलता है। प्रिय प्रेरित यूहन्ना ने 1:2 में लिखा है, ''यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने उसे देखा और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था और हम पर प्रगट हुआ।'' यह बात सुसमाचार के यूहन्ना के वृत्तांत से मेल खाती है। जीवन प्रकट हुआ था और वह अनन्त जीवन था। यह पहले पिता के साथ था और फिर हम पर प्रकट हुआ था। यदि परमेश्वर का पुत्र पिता के साथ था और फिर हम पर प्रकट हुआ था और अनन्त जीवन भी पहले पिता के साथ था और फिर हम पर प्रकट हुआ था तो हमारा यह निष्कर्ष सही ही होना चाहिए कि अनन्त जीवन परमेश्वर का ही पुत्र था; परन्तु निष्कर्ष निकालना हम पर नहीं छोड़ा गया है। यूहन्ना ने कहा, ''और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं; सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है'' (1 यूहन्ना 5:20, 21)। इससे हमें पता चलता है कि परमेश्वर का पुत्र ही वह अनन्त जीवन है जो पहले परमेश्वर के साथ, मनुष्य के रूप में हम पर प्रकट हुआ और यीशु मसीह के रूप में प्रसिद्ध है।

हम अपनी खोज को यहीं समाप्त कर सकते हैं, क्योंकि हमने आत्मा की प्रेरणा प्राप्त सकारात्मक कथन की खोज कर ली है कि यह परमेश्वर का पुत्र अर्थात यीशु मसीह ही, जो मनुष्य बना और हमारे बीच में रहा, ही ''सच्चा परमेश्वर है।''

पौलुस

पौलुस यीशु का एक और प्रेरित था जिसने उसके परमेश्वर होने के बारे में लिखा, जिसे स्वर्ग पर जाने के बाद प्रभु ने दर्शन दिया था, और जिसे ऐसी बातें देखने और सुनने के लिए ऊपर उठाया गया था जो मनुष्य के होंठों पर आनी उचित नहीं (2 कुरिन्थियों 12:2–4)। उसने यीशु का वर्णन इन शब्दों में किया:

> [यीशु] ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलिप्पियों 2:6–8)।

यहां पौलुस ने कहा कि यीशु कभी परमेश्वर के तुल्य था, परन्तु उसने अपने आपको खाली कर दिया, अर्थात उस समानता को त्याग दिया था। पृथ्वी पर रहते समय, यीशु इस बात में परमेश्वर के तुल्य था कि परमेश्वर की परिपूर्णता, अर्थात परमेश्वर की सारी शक्तियां उसमें थीं। वह किसी भी रूप में परमेश्वर के तुल्य *नहीं* था? उसे मनुष्य की समानता में बनाया

गया था और अब वह परमेश्वर अर्थात आत्मा की समानता में नहीं था। उसने अपने आपको मनुष्य बनाने के समय यह त्याग दिया था। यही वह व्याख्या है जिसकी हम खोज कर रहे थे कि यीशु मसीह परमेश्वर ही था जो मनुष्यों की समानता में मनुष्य बनकर हमारे बीच रहा (देखिए इब्रानियों 2:14-17)।

पतरस ने परमेश्वर के पुत्र के विषय में आगे कहा,

> वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रति रूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं (कुलुस्सियों 1:15-17)।

यीशु की ईश्वरीयता में विश्वास न करने वाले लोग "सारी सृष्टि में पहलौठा" शब्द का अर्थ निकालने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि वह "सबसे पहले बनाया गया जीव" है। अगला कथन यह कारण बताने के लिए दिया गया है कि वह "सारी सृष्टि में पहलौठा" क्यों है, क्योंकि सारी वस्तुएं उसी के द्वारा सृजी गई थीं। "पहलौठा" शब्द का अर्थ पहले पैदा होने वाले के साथ-साथ वारिस और प्रभु भी है। यीशु सारी सृष्टि का प्रभु है, क्योंकि सारी वस्तुएं उसी के द्वारा बनाई गई थीं। यह व्याख्या सही लगती है; दूसरी नहीं। "वही सब वस्तुओं में प्रथम है" का अर्थ सब सृजी हुई वस्तुएं है। यह बात उसकी ईश्वरीयता का यह तर्क देती है कि वह सब सृजी हुई वस्तुओं से पहले था। "और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।" किसी सृजे गए जीव के लिए यह बात नहीं कही जा सकती, परन्तु उसके लिए जिसने सब वस्तुओं को बनाया हो यह बात कही जा सकती है।

आइए, आगे पौलुस द्वारा दिए गए कथन पर विचार करते हैं जो इतना स्पष्ट है कि उस पर संदेह करने या उसे न समझने की गुंजाइश ही नहीं रहती है। यहूदियों से बात करते हुए, उसने कहा, "... और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सबके ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है" (रोमियों 9:5)। वर्तमान अनुवाद में इस आयत का स्पष्ट अनुवाद यह है कि मसीह, उसकी यहूदी वंशावली द्वारा दिए गए शरीर में, परमेश्वर है। क्योंकि वह परमेश्वर है, इसलिए यहूदियों की ओर से उसे शाप दिए जाते हैं, परन्तु वह उनकी आशिषों का अधिकारी है।

प्रेरित पौलुस ने यीशु के पुनरुत्थान को इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण माना कि वह परमेश्वर का पुत्र अर्थात मनुष्य के रूप में परमेश्वर था। दो बार परमेश्वर ने स्वर्ग से यह कहा था, "यह मेरा प्रिय पुत्र है" (मत्ती 3:17; 17:5; मरकुस 9:7; देखिए लूका 9:35), परन्तु यहूदियों ने उस पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया था। यीशु ने ऐसे आश्चर्यकर्म किए थे जिन्हें कोई मनुष्य नहीं कर सकता था, फिर भी उन्होंने विश्वास नहीं किया। उसने शपथपूर्वक प्रमाणित किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है; परन्तु उसकी गवाही को मानने

के स्थान पर उन्होंने उसे परमेश्वर की निन्दा करने वाला कहकर क्रूस पर चढ़ा दिया था। स्वर्ग के महान परमेश्वर ने पृथ्वी के बड़े से बड़े न्यायालयों का फैसला पलट दिया अर्थात मसीह को मुर्दों में से जिलाकर उसने ऐलान कर दिया कि वह उसका पुत्र है।

परमेश्वर के सुसमाचार की बात करते हुए, पौलुस ने लिखा है:

> अपने पुत्र ... जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है (रोमियों 1:3, 4)।

यहां पौलुस ने हमारे प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहा है। यह पुत्र दाऊद के द्वारा मनुष्य बना था, परन्तु उसके पुनरुत्थान से यह घोषित किया गया कि वह मनुष्य से ऊपर था। उसे यह कहने के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है अर्थात यह कि बेशक वह दाऊद का पुत्र था, परन्तु उसका सम्बन्ध उससे बढ़कर था। उसकी ईश्वरीयता दाऊद के साथ उसके सम्बन्ध से नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध से आई। परमेश्वर ने यीशु के दावे का उसे मुर्दों में से जिलाकर सम्मान किया था। यह आयत यीशु मसीह के मनुष्य और परमेश्वर होने के प्रमाण में मजबूत चट्टान की तरह है। यह "यीशु मसीह हमारे प्रभु" में मनुष्य और परमेश्वर को यह कहते हुए मिला देती है कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

देहधारी होने के विषय में, पौलुस ने कहा कि यीशु दाऊद के वंश से "उत्पन्न" हुआ था। जन्म से आरम्भ का संकेत मिलता है। परन्तु मसीह के आत्मा के लिए पौलुस ने कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र "घोषित किया गया था।" यीशु नासरी में हम उस मानवीयता का विलय देखते हैं जिसका आरम्भ इसके जन्म, और ईश्वरीयता के समय था अर्थात जो परमेश्वर का था और परमेश्वर था। उसमें और केवल उसी में हम परमेश्वर को देहधारी हुए देखते हैं।

यीशु के काम उसके परमेश्वर होने की घोषणा करते हैं

जो काम यीशु ने पृथ्वी पर रहते हुए किए वे उसके अपने ही कथन के अनुसार ऐसे काम थे जो किसी ने कभी नहीं किए थे। उसने कहा, "यदि मैं उनमें वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते" (यूहन्ना 15:24क)। उसने परमेश्वर होने के लिए अपने कामों को पर्याप्त माना; उसने कहा, "क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है" (यूहन्ना 5:36)। ये काम पर्याप्त ही नहीं, बल्कि ज़ोरदार गवाही देते हैं कि मसीह परमेश्वर है। विश्वास न करने वाले सभी लोगों को दण्ड दिया जाता है। उसने कहा था, "क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे" (यूहन्ना 8:24)।

दुष्टात्माओं पर शक्ति

यीशु ने दुष्टात्माओं पर जो शक्ति दिखाई वह मनुष्य से बढ़कर होने का प्रमाण है। जब उस पर बालजबूल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगाया गया था तो उसने उत्तर दिया था, ''कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले; और तब उसके घर को लूट लेगा'' (मरकुस 3:27)। यहां उसने उस शक्ति के होने का दावा किया जो मनुष्य में नहीं हो सकती थी।

यीशु की उपस्थिति ही दुष्टात्माओं को व्याकुल करने वाली थी। कफ़रनहूम के एक आराधनालय में, एक दुष्टात्मा यह कहते हुए पुकार उठी थी, ''हे यीशु नासरी, ... क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं जानता हूं कि तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!'' (मरकुस 1:24)। एक और दुष्टात्मा ने कहा था, ''तू परमेश्वर का पुत्र है!'' (मरकुस 1:11ख)। दुष्टात्मा ने उसे अपना नाश करने वाले के रूप में पहचाना; उन्होंने कहा, ''क्या तू समय से पहले हमें दुख देने यहां आया है?'' (मत्ती 8:29)। यह प्रमाणित करने के अलावा कि उसकी शक्ति परमेश्वर की शक्ति से कम नहीं थी, ये आयतें दिखाती हैं कि दुष्टात्माएं भी यीशु मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचानती थीं, जिसका सामना उन्हें दण्ड के समय करना पड़ेगा।

पाप क्षमा करने की शक्ति

जब यीशु पृथ्वी पर था, तो उसने लोगों के पाप क्षमा किए, जिसके लिए ग्रन्थियों और फरीसियों ने लूका 5:20, 21 में बिल्कुल सही कहा कि परमेश्वर को छोड़ कोई और ऐसा नहीं कर सकता था। जब यीशु ने एक आदमी से कहा ''तेरे पाप क्षमा हुए'' तो उन्होंने उस पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगाया था। उसने उस आदमी को उनकी आंखों के सामने यह प्रमाणित करने के लिए चंगा किया था कि उसमें पापों की क्षमा करने की शक्ति है (मत्ती 9:2–8 और मरकुस 2:1–12 भी देखिए।) इस घटना से दो सच्चाइयां प्रमाणित होती हैं। पहली, जो आदमी अपनी ही शक्ति से बीमार को चंगा कर सकता है वह पापों से क्षमा भी दे सकता है। दूसरी, क्योंकि यीशु पापों से क्षमा दे सकता था (जो कि परमेश्वर को छोड़ कोई और नहीं कर सकता), इसलिए वह परमेश्वर था।

असीमित शक्ति

तूफ़ान को शांत करने, रोटी और मछली के टुकड़ों से हज़ारों लोगों को पेट भर खाना खिलाने और फिर भी उन टुकड़ों की बारह टोकरियां इकट्ठी करने, पानी पर चलने, और मुर्दों को जिलाने की बातों को विस्तार से बताने के लिए समय नहीं है। इन सभी घटनाओं पर आधारित निष्कर्ष यही है कि यीशु देहधारी परमेश्वर था। क्योंकि अब तक कोई मनुष्य ऐसा आश्चर्यकर्म नहीं कर सका है, सिवाय उसके जब यीशु मसीह ने नासरी के नाम से कहकर ऐसा किया (जैसे प्रेरितों 3:6 में सुन्दर नामक फाटक पर पतरस ने एक लंगड़े

भिखारी को चंगा किया था), इसलिए हमारा निष्कर्ष सही है कि यीशु मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ परमेश्वर था। देह में रहते हुए ऐसी शक्ति किसी के पास नहीं हुई है।

सारांश

यह विषय कि यीशु परमेश्वर का पुत्र अर्थात देह में प्रकट हुआ परमेश्वर है, सुसमाचार का सार है। यह वह आधार है जिस पर शेष सारी बातें टिकी हुई हैं। इस सच्चाई से, हम परीक्षा की घड़ी में स्थिर रहने के लिए बहुत सी शिक्षाएं ले सकते हैं।

पहली, यहूदी मत पर मसीहियत की श्रेष्ठता इस आधार पर है कि यीशु मूसा से बड़ा है। यीशु परमेश्वर का पुत्र था; परन्तु मूसा नहीं। इब्रानियों की पुस्तक में इस पर विस्तार से चर्चा की गई है।

दूसरी, स्वर्गदूतों से बढ़कर महिमा पाने की हमारी आशा इस सच्चाई पर स्थिर है कि यीशु देह में परमेश्वर था। वह हमारे सामने एक उदाहरण है; वह प्रमाण के रूप में कि हम भी उसकी तरह ही ऊंचे किए जाएंगे, पहला फल है (1 कुरिन्थियों 15:20–22; 1 पतरस 5:6)। उसके साथ हमें वह मीरास मिलेगी जो अविनाशी और निर्मल और अजर है, अर्थात हमारे लिए स्वर्ग में रखी गई है (1 पतरस 1:4)।

तीसरी, परमेश्वर का देहधारी होना और मनुष्य के बीच में रहना खोए हुओं के लिए उसके प्रेम को दिखाता है। यहां हमें लोगों को ढूंढ़ते हुए परमेश्वर का चित्र मिलता है। परमेश्वर की खोज करने के मनुष्य के कर्त्तव्य के बारे में बहुत कुछ कहा गया है; परन्तु परमेश्वर को खोजने का मनुष्य का यह कर्त्तव्य इसीलिए बना क्योंकि परमेश्वर खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन्हें बचाने के लिए आया था (लूका 19:10)। यह दिलचस्प बात है कि परमेश्वर का पुत्र उन स्वर्गदूतों के ऊपर से निकल गया जो गिर गए थे और उसने उनकी सहायता नहीं की, परन्तु वह ''इब्राहीम के वंश को सम्भालता है'' (इब्रानियों 2:16)। उसने स्वर्गदूतों से नहीं बल्कि मनुष्य से प्रेम किया और उसे ऊंचा उठाया।

चौथी, परमेश्वर का देहधारी होना, लोगों में रहना और मनुष्य के लिए मरना दिखाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य का कितना महत्व है। यीशु ने यहूदियों को समझाया था कि मनुष्य का मोल चिड़िया या भेड़ से अधिक है। यह तथ्य कि वह मनुष्य के लिए मरा, हमारे स्थान पर उसने अपना प्राण दे दिया, संकेत देता है कि उसने अपने प्राण से अधिक हमारे प्राणों को महत्व दिया था। वह हमें बचाना चाहता है–न केवल नरक से बल्कि इस जीवन में पाप से भी, ताकि हमारे जीवन पृथ्वी पर भी अच्छे हो जाएं। यदि हम पाप में रहकर ही जीवन बिताते हैं, तो हम किसी काम के नहीं। उसके लिए जीना ही जीने का एकमात्र ढंग है जो हमारे जीवन को उपयोगी बनाता है।

पाद टिप्पणियां

[1]जस्टिन मार्टिर *डॉयलाग ऑफ़ जस्टिन, फिलोस्फ़र एण्ड मार्टिर, विद ट्राइफो, ए ज्यू* 48. एलेग्ज़ेंडर रॉबर्टस एण्ड जेम्स डोनॉल्डसन, सं. द *एंटि–नाईसीन .फ़ादर्स: ट्रांसलेशन्ज़ ऑफ़ द राइटिंग्स ऑफ़ द .फ़ॉदर्स डाउन टू. ए.डी.* 325, rev. और arr. ए. क्वीवलैंड कोक्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957)। [2]वहीं, 49.

यह पाठ *अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज लैक्चर्स,* 1938 से लिया गया था। अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के निर्देशक की अनुमति लेकर छापा गया।